

Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

मार्गदर्शन और परामर्श प्रक्रिया में बाधाएँ (Barriers in Guidance and Counselling Process)

परिचय (Introduction)

- मार्गदर्शन (Guidance) और परामर्श (Counselling) ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएँ हैं जो व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत, शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में आने वाली कठिनाइयों को समझने और उनका समाधान खोजने में सहायता करती हैं।
- लेकिन वास्तविक जीवन में यह प्रक्रिया हमेशा सरल और प्रभावी नहीं होती, क्योंकि कई बाहरी (external) और आंतरिक (internal) कारक इसे बाधित करते हैं।
- इन बाधाओं को समझना आवश्यक है ताकि परामर्शदाता (counsellor) उचित रणनीतियाँ अपनाकर व्यक्ति की सहायता कर सके।

1. व्यक्तिगत बाधाएँ (Personal Barriers)

ये बाधाएँ व्यक्ति के अपने मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और व्यवहारिक कारणों से उत्पन्न होती हैं।

a) आत्म-जागरूकता की कमी (Lack of Self-awareness)

- कई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, भावनाओं, रुचियों और क्षमताओं के प्रति सचेत नहीं होते।
- परिणामस्वरूप वे अपनी समस्या को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाते।
- उदाहरण: कोई छात्र यह नहीं समझ पाता कि उसकी पढ़ाई में असफलता का कारण उसकी रुचि की कमी है या अध्ययन विधि की कमी।

b) आत्म-सम्मान या आत्मविश्वास की कमी (Low Self-esteem or Confidence)

- कम आत्मविश्वास वाले व्यक्ति परामर्शदाता से खुलकर बात नहीं कर पाते।
- वे अपनी भावनाएँ छिपाते हैं या सोचते हैं कि "मैं अच्छा नहीं हूँ"।



Edit with WPS Office

c) भय और असुरक्षा (Fear and Insecurity)

- कुछ व्यक्तियों को डर होता है कि परामर्शदाता उनकी बातें दूसरों से साझा कर देगा।
- कुछ को “जज किए जाने” (judged) का भय होता है।

d) प्रेरणा की कमी (Lack of Motivation)

- यदि व्यक्ति बदलाव लाने या अपनी समस्या हल करने के लिए तैयार नहीं है, तो परामर्श बेअसर हो जाता है।

e) गलत धारणाएँ (Misconceptions about Counselling)

- बहुत से लोग मानते हैं कि “काउंसलिंग लेना मतलब मैं कमजोर या मानसिक रूप से बीमार हूँ”, जिससे वे सहायता नहीं लेते।

2. पारिवारिक बाधाएँ (Family Barriers)

परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व और मानसिक विकास की पहली इकाई है। यदि परिवार का दृष्टिकोण सहयोगी नहीं है, तो यह परामर्श प्रक्रिया में बड़ी बाधा बनता है।

a) परिवार का असहयोग (Lack of Family Support)

- यदि माता-पिता या अभिभावक व्यक्ति की समस्या को गंभीरता से नहीं लेते, तो परामर्शदाता की सहायता सीमित हो जाती है।

b) अत्यधिक अपेक्षाएँ (Over-expectations)

- माता-पिता बच्चों से अधिक उम्मीदें रखते हैं, जिससे बच्चों पर मानसिक दबाव बढ़ता है।
- यह दबाव खुली बातचीत में रुकावट डालता है।

c) संवाद की कमी (Lack of Communication)

- जब परिवार के सदस्यों के बीच संवाद कमजोर होता है, तब व्यक्ति अपनी समस्याओं को छिपाने लगता है।



d) पारिवारिक झगड़े या अस्थिरता (Family Conflicts or Instability)

- लगातार तनावपूर्ण माहौल व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अस्थिर बना देता है, जिससे परामर्श का प्रभाव घट जाता है।

3. सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ (Social and Cultural Barriers)

a) सामाजिक कलंक (Social Stigma)

- समाज में आज भी यह धारणा है कि परामर्श लेना “कमज़ोरी” या “पागलपन” का संकेत है।
- इसके कारण व्यक्ति परामर्श केंद्र जाने से कतराता है।

b) रूढ़िवादी दृष्टिकोण (Conservative Attitudes)

- कुछ समाजों में जीवन के निर्णय जैसे – विवाह, करियर या शिक्षा – सामूहिक रूप से लिए जाते हैं, व्यक्तिगत इच्छा का महत्व कम होता है।

c) सांस्कृतिक भिन्नताएँ (Cultural Differences)

- परामर्शदाता और परामर्शार्थी (client) की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भिन्न होने पर संवाद में कठिनाई आ सकती है।

d) लिंग आधारित पूर्वाग्रह (Gender Bias)

- कई समाजों में महिलाओं या अन्य वर्गों को समान अवसर नहीं दिए जाते, जिससे वे अपनी समस्याएँ खुलकर नहीं रख पातीं।

4. शैक्षिक और संस्थागत बाधाएँ (Educational and Institutional Barriers)

a) प्रशिक्षित परामर्शदाताओं की कमी (Lack of Trained Counsellors)

- बहुत से विद्यालयों और कॉलेजों में योग्य और प्रशिक्षित परामर्शदाता नहीं होते।
- इससे छात्रों की समस्याएँ सही समय पर पहचानी नहीं जातीं।



b) संसाधनों की कमी (Lack of Facilities and Resources)

- परामर्श कक्ष, गोपनीय स्थान, सामग्री और समय की कमी परामर्श को कमजोर बनाती है।

c) प्रशासनिक समर्थन का अभाव (Lack of Administrative Support)

- यदि स्कूल या कॉलेज प्रशासन परामर्श सेवाओं को महत्व नहीं देता, तो वे केवल औपचारिकता बनकर रह जाती हैं।

d) शिक्षकों की संवेदनशीलता की कमी (Lack of Teacher Awareness)

- कई शिक्षक विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक समस्याओं को समझने में असमर्थ रहते हैं, जिससे समय रहते सहायता नहीं मिल पाती।

5. आर्थिक बाधाएँ (Economic Barriers)

a) वित्तीय कठिनाइयाँ (Financial Difficulties)

गरीब परिवार पेशेवर परामर्श सेवाओं का खर्च नहीं उठा पाते।

यह विशेष रूप से निजी विद्यालयों या संस्थानों में बड़ी समस्या है।

b) सरकारी निवेश की कमी (Low Government Investment)

शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य क्षेत्र में सीमित बजट के कारण परामर्श सेवाएँ विकसित नहीं हो पातीं।



6. परामर्शदाता से जुड़ी बाधाएँ (Counsellor-related Barriers)

a) अपर्याप्त प्रशिक्षण और अनुभव (Lack of Proper Training and Experience)

एक अप्रशिक्षित परामर्शदाता समस्या की गहराई को नहीं समझ पाता, जिससे गलत सुझाव दिए जा सकते हैं।

b) सहानुभूति और संवेदनशीलता की कमी (Lack of Empathy and Sensitivity)

अगर परामर्शदाता ठंडा, उदासीन या निर्णयात्मक व्यवहार करता है, तो व्यक्ति असहज महसूस करता है।

c) गोपनीयता का उल्लंघन (Breach of Confidentiality)

यदि परामर्शार्थी को यह विश्वास नहीं होता कि उसकी बात गुप्त रहेगी, तो वह खुलकर अपनी समस्या नहीं बताएगा।

d) संचार कौशल की कमी (Poor Communication Skills)

भाषा या अभिव्यक्ति की कठिनाई भी प्रभावी परामर्श में बाधा बन सकती है।

e) सांस्कृतिक असंवेदनशीलता (Cultural Insensitivity)

परामर्शदाता यदि व्यक्ति की सांस्कृतिक या सामाजिक पृष्ठभूमि को न समझे, तो उसका दृष्टिकोण अस्वीकार्य लग सकता है।

7. तकनीकी और प्रशासनिक बाधाएँ (Technical and Administrative Barriers)

a) आधुनिक तकनीक का अभाव (Lack of Technology Use)

आज के डिजिटल युग में ऑनलाइन काउंसलिंग, टेस्टिंग टूल्स और रिकॉर्ड-कीपिंग आवश्यक हैं।

तकनीकी संसाधनों की कमी परामर्श की गुणवत्ता को घटाती है।

b) समय की कमी (Lack of Time)

शिक्षक और परामर्शदाता दोनों के पास अक्सर पर्याप्त समय नहीं होता कि वे प्रत्येक व्यक्ति को गहराई से समझ सकें।



Edit with WPS Office

निष्कर्ष (Conclusion)

मार्गदर्शन और परामर्श की प्रक्रिया तभी सफल हो सकती है जब इन सभी बाधाओं को पहचाना और दूर किया जाए।

इसके लिए निम्न प्रयास आवश्यक हैं —

- परामर्श सेवाओं के प्रति समाज में जागरूकता बढ़ाई जाए,
- परामर्शदाताओं को उचित प्रशिक्षण और संसाधन दिए जाएँ,
- विद्यालयों और कॉलेजों में परामर्श केंद्रों को सशक्त बनाया जाए,
- परिवार और समाज दोनों को संवेदनशील बनाया जाए।

इस प्रकार, जब परामर्शदाता, व्यक्ति, परिवार, और समाज — सभी मिलकर सहयोग करते हैं, तो मार्गदर्शन और परामर्श प्रक्रिया अधिक प्रभावी और फलदायी बनती है।

